INFECTED PART	DISEASES	**लक्षण**	**प्रबंधन**
	अल्टरनेरिया(पत्ती (झुलसा	1.पत्तियो के किनारे के भाग मे अनियमित, गोल एव्म त्रिकोणीय धब्बे पड जाते है। 2. सर्वप्रथम संक्रमण कलियों पर होता है| 3.फल पर धब्बे गहरे, भूरे, दबे हुए, अस्पष्ट लगातार घेरे रूप में के (गोले) दिखाई देते हैं|	1. रोग के संक्रमण को प्रभावित रूप से कम करने के लिए सोलेनेसी (बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च, आलू इत्यादि) कुल को छोडकर अन्य फसलों का फसल चक्र अपनाना आवश्यक है | 2. बीज शोधन कैप्टान 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करना चाहिए | 3. रोग की रोकथाम के लिए क्लोरोथैलोनिल 0.2(दो ग्राम प्रति लीटर) प्रतिशत का छिडकाव आठ दिन के अंतराल पर फूलों पर संक्रमण के बाद शुरू करना चाहिए।
	सैपटोरिया झुलसा	1.पानी से भरे हुए ध्ब्बे पत्तियों की निचली सतह पर दिखाई देते हैं| 2.वृद्धि पर , गहरे भूरे रंग के मार्जिन और सफेद भूरे रंग के धब्बे हो जाते हैं | 3.इसी तरह के धब्बे पुष्प और तने पर विकसित हो सकते हैं |	1.रोग के संक्रमण को प्रभावित रूप से कम करने के लिए सोलेनेसी कुल (बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च, आलू इत्यादि) को छोडकर अन्य फसलों का फसल चक्र अपनाना आवश्यक है | 2.बीज शोधन कैप्टान 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करना चाहिए | 3. रोग की रोकथाम के लिए क्लोरोथैलोनिल 0.2 (दो ग्राम प्रति लीटर) प्रतिशत का छिडकाव आठ दिन के अंतराल पर फूलों पर संक्रमण के बाद शुरू करना चाहिए।

 	जिवाणु जनीत उकैटा	1.बिना पीले पड़े, पुरा पौधा एकाएक गिर जाता है। 2.यदि तने की किसी भाग को काटे या जोर से दबाए तो इसमे से (बैक्टिरियल) रस टपकेगा।	1.हमेशा रोग से मुक्त, स्वस्थ पौध का प्रत्यारोपण (ट्रांसप्लांटिंग)। 2.मिट्टी का चूने या ब्लीचिंग पाउडर के साथ इलाज।
 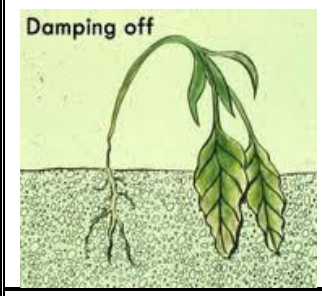	अर्धपदगलन/(Damping Off)	1.उगने से पहले: मूलिका और कल्ला पूरा सड़ जाता है। 2. उगने के बाद लक्षण: पत्तो का भूरा होना व मुर्झा जाना।	1.बीज गहरी नहीं बोया जाना चाहिए। 2. बुवाई से पहले 15-20 दिनों में 100 लीटर पानी में पांच लीटर फोर्मेलिन मिलायै और सीड-बैड पर स्प्रे करे। 3. 0.05 प्रतिशत कार्बेंडाज़िन (carbendazin) साथ नर्सरी बेड की सिंचाई।
II 	फल गलन (Fruit Rot)	1.आम तौर पर जहां फल मिट्टी छू लेती है वहां ये रोग एक भूरा हरे या भूरे रंग पानी से भरे हुए ध्ब्बे के रूप में प्रकट होता है। 2. जब युवा हरे फल संक्रमित होते हैं, वे आम तौर पर सिकुड जाते हैं।	1.अच्छी जल निकासी की स्थिति क्षेत्र में रखा जाना चाहिए। 2.**4** बार (Difolaton) डाइफोलेटोन (0.3%) के साथ 10 दिन के अंतराल में छिड़काव प्रभावी रूप से बीमारी को नियंत्रित करता है।

 	पछेती झुलसा (Late Blight)	1.पत्तियों के निचले सतह पर या उपरी भाग पर सफेद फफूंदी का विकास। 2.अंततः पत्तियों सूखी और परिगलित हो जाती है। 3.फल दृढ़ रहता है पर धब्बै धीरे-धीरे सख्त हो जाते हैं और भुरे रंग के बनकर पूरे फल पर फैल जाते है।	1. रोग के संक्रमण को प्रभावित रूप से कम करने के लिए सोलेनेसी कुल को छोडकर अन्य फसलों का फसल चक्र अपनाना आवश्यक है। 2. बीज शोधन कैप्टान 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करना चाहिए। 3. रोग की रोकथाम के लिए क्लोरोथैलोनिल 0.2 (दो ग्रामप्रति लीटर) प्रतिशत का छिडकाव आठ दिन के अंतराल पर फूलों पर संक्रमण के बाद शुरू करना चाहिए।